① Hobbe's Sovereignty

राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में हॉब्स की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन सम्प्रभुता का सिद्धान्त है। सम्प्रभुता का आधार है अनुबन्ध। तात्पर्य यह है कि सम्प्रभुता, राज्य की उत्पत्ति के सामाजिक संविदा का प्रतिफल है। सामाजिक समझौते के फलस्वरूप उत्पन्न राज्य को सुरक्षित रखने के लिए एक सर्वोच्च शक्ति की आवश्यकता हुई क्योंकि स्वयं हॉब्स ने कहा है, "शक्ति के अभाव में समझौता केवल शब्दजाल है।" अतएव उसने एक सर्वशक्तिशाली सम्प्रभु का निर्माण किया, जो समझौते की पवित्रता को सुरक्षित रखकर शान्ति की स्थापना करे तथा इस समझौते का उल्लंघन करनेवाले लोगों को दण्ड दे। यद्यपि बोदाँ ने भी सर्वोच्च शक्ति को सम्प्रभु माना किन्तु उनका सम्प्रभुता निरंकुश नहीं है। पर हॉब्स की सम्प्रभुता असीमित और निरंकुश शक्ति का सांगोपांग एवं क्रमबद्ध सिद्धान्त है।

यद्यपि हॉब्स निरपेक्ष सम्प्रभुता का समर्थक था तथापि उसकी वैयक्तिक रुचि नृपतन्त्र में थी। हॉब्स के निरंकुश प्रभुसत्ता का मूल लक्ष्य था इंग्लैण्ड की स्थायी समय में इंग्लैण्ड में राजतन्त्रात्मक शासन की स्थापना करना। तत्कालीन चर्च एवं संसद के बीच सत्ता के लिए संघर्ष चल रहा था। अतः वह सिद्ध करना चाहता था कि निरंकुश राजतन्त्र या सम्प्रभुता ही इंग्लैण्ड की अराजकता का निदान था। अतः हॉब्स निरंकुश राजतन्त्र या सम्प्रभुता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। हॉब्स के अनुसार सम्प्रभु, वह शक्ति है, जिसका एक विशाल जनसमूह ने पारस्परिक समझौता करके इस उद्देश्य से अपने कार्यों का कर्ता बना लिया है कि वह उनकी शान्ति और सुरक्षा के लिए उन सबकी शक्तियों और साधनों की आवश्यकता के अनुसार प्रयोग कर सकता है।"

हॉब्स का सम्प्रभुता उस व्यक्ति या व्यक्तिसमूह में निहित है जिसे लोगों ने आपस में समझौता करके अपने सम्पूर्ण अधिकार उसे सौंप दिया किन्तु वो स्वयं उस समझौते का हिस्सा नहीं था। हॉब्स के सम्प्रभुता की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

① सम्प्रभुता निरंकुश — हॉब्स का सम्प्रभुता निरंकुश है। वह कानूनों का स्रष्टा एवं प्राकृतिक अधिकारों का प्रदाता है। वही न्याय की जननी है। हॉब्स के दर्शन में शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त का कोई महत्व नहीं। हॉब्स का सम्प्रभुता सर्वोच्च एवं सर्वशक्तिमान है। प्रतिबंधों के अभाव में सम्प्रभुता का निरंकुश होना स्वभाविक है।

② सम्प्रभुता अविभाज्य — सम्प्रभुता की निरपेक्षता का यह तकाजा है कि यह अविभाज्य है। क्योंकि सम्प्रभुता के विभाजन से राज्य का अस्तित्व स्वतः समाप्त हो जाता है। इंग्लैण्ड के गृहयुद्ध इसी विभाजन का परिणाम था।

③ अदेय सम्प्रभुता — चूंकि हॉब्स का सम्प्रभु अविभाज्य है अतः उसे किसी समुदाय या संघ में बांटा नहीं जा सकता। सम्प्रभुता के साथ ही राज्य का अस्तित्व है और उसके समाप्त होते ही वह भी समाप्त हो जाता है।

④ असीमित सम्प्रभुता — हॉब्स के अनुसार कानून तथा नैतिकता उसकी इच्छाएँ हैं। उसकी शक्ति की कोई सीमा नहीं।

⑤ सम्प्रभुता अपरिवर्तनशील — सम्प्रभुता अपरिवर्तनशील इस अर्थ में है कि एक बार जिन लोगों ने समझौता द्वारा सम्प्रभु का निर्माण कर लिया उसके बाद पुनः उसे उनकी पूर्व स्वीकृति के उसे समाप्त नहीं कर सकता है।

⑥ सम्प्रभु अदण्डनीय — सम्प्रभु कोई गलती नहीं करता इसलिए वह अदण्डनीय है उसे दण्ड नहीं दिया जा सकता।

(7) सम्प्रभु अनुत्तरदायी — चूंकि सम्प्रभु स्वयं किसी समझौते का हिस्सा नहीं होता इसलिए वह अपने कार्यों के लिए किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होता है।

(8) सम्प्रभु कानून का स्रोत है — हॉब्स ने नागरिक कानून एवं प्राकृतिक कानून में भी अन्तर स्पष्ट किया है। उनके अनुसार नागरिक कानून सम्प्रभु का आदेश है पर प्राकृतिक कानून विवेक का। स्वयं प्रथा की वैधता भी सम्प्रभु के आदेश पर निर्भर करता है।

सम्प्रभु के ~~कार्य~~ :-

आलोचकों का मानना है कि सम्प्रभुता अविभाज्य नहीं है — हॉब्स का इस आधार पर आलोचना की जाती है की वह समाज को अराजकता से बचाने का एकमात्र विकल्प निरंकुश सत्ता को माना और इस आधार पर सम्प्रभुता को अविभाज्य माना। किन्तु निरंकुश सत्ता स्थायी रूप से न तो अराजकता का दमन कर सकती है और न आधुनिक युग में प्रभुसत्ता को अविभाज्य माना जा सकता है। संयुक्त राज्य अमेरीका में प्रभुसत्ता शासन के तीनों अंगों में बंटी हुई है। मिश्रित शासन व्यवस्थाओं को ही आज के युग में सुशासन के लिए ~~उपयुक्त~~ उपयुक्त माना जाता है, जबकि हॉब्स इसका विरोधी था। इसके अलावे समझौता एकपक्षीय नहीं हो सकता। क्योंकि समझौता हमेशा द्विपक्षीय होता है। अतः हॉब्स की यह बात तर्कसंगत नहीं लगता है।

इसके अलावे राज्य भय की उपज नहीं है। आज जब लोककल्याणकारी राज्य का सपना साकार हो चुका है ऐसी स्थिति में राज्य को भय का उपज मानना गलत है।

किन्तु इन आलोचनाओं के बावजूद यूरोपीय राजनीतिक चिन्तन पर हॉब्स के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। ऑस्टिन द्वारा प्रतिपादित वैधानिक सम्प्रभुता का सिद्धान्त हॉब्स के चिन्तन से प्रेरित है।

मैक्सी — हॉब्स अंग्रेज जाति के महान विचारकों में से एक था। उनका प्रभाव राजदर्शन पर तब तक रहेगा जब तक कि लोग राजनीतिक विषयों पर चर्चा करते रहेंगे।

अन्ततः — "सम्प्रभु नश्वर ईश्वर है, जिसके हाथों में तलवार और छड़ी दोनों है।"

—